REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

हिन्दी उपन्यासों में गांधी विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में आर्थिक तत्वों की अभिव्यक्ति

डॉ. सुरेशकुमार केसवानी
एम.ए., बी.एड., एम.फिल., पी.एच.डी.
अधिव्याखयाता व विभागाध्यक्ष (हिन्दी),सीताबाई कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, अकोला.

ABSTRACT:

गांधीजी की लोकप्रियता और उनकी सर्वजन सुलभ विचारधारा ने उपन्यास साहित्य में नवीन राष्ट्रीयता का संचार किया। पूज्य बापू की आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक विचारधारा साहित्यिक रचनाओं में प्रतिभासित होने लगी। आदर्शनिष्ठ उपन्यासकारों नें महात्माजी की सर्वव्यापक विचारधारा से प्रेरणा ग्रहण की है और इसी के फलस्वरूप प्रभावित उपन्यास साहित्य में सत्य, अहिंसा, नारी जागरण, हरिजनोद्घार, ग्रामोति तथा राष्ट्रप्रेम का रंग अत्यंत गहरा दिखाई देता है।

प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की अपेक्षा प्रेमचंदयुगीन उपन्यासों में गांधीजी के रचनात्मक प्रभाव की संभावना अधिक रही क्योंकि प्रेमचंद तथा उनके समकालीन समानधर्मा उपन्यासकारों का आदर्शवाद मानवता में आसक्ति रखता था और वह आसकित रचनात्मक प्रणालियों में गांधी विचारधारा के अत्यधिक निकट है।

कथा कृतियों का अध्ययन करते समय यह बात अत्यंत स्पष्ट रुप से सामने आई कि यद्यपि उपन्यासकार गांधी विचारधारा से प्रभावित अवश्य हैं, तथापि उनकी कृतियों में प्रत्यक्ष रूप से गांधी सिद्घांतों की व्याख्या नहीं की गई है, और न कहीं एक कृति में सभी सिद्घांतों का प्रतिपादन करने का प्रयत्न ही किया गया है। यह आवश्यक और उचित भी नहीं है कि सभी तत्व एक ही उपन्यास या सभी उपन्यासों में एक साथ समाहित कर लिया जाय। यही कारण है कि किसी कृति में एक विचार है तो किसी में दूसरा। इस प्रकार गांधी विचारधारा के विभिन्न पक्षों का ग्रहण अलगअलग उपन्यासों में अलगअलग ढंग से हुआ है। अर्थात कथा के किसी मोड़ पर या पड़ाव पर इस विचारधारा को अभिव्यक्ति मिली है तो कहीं पात्रों के क्रियाकलापों में चरितार्थ हुई है, तो कहीं घटना या प्रसंग पर इसकी झलक दिखाई दी है और कहीं उद्देश्य के रुप में इसने अपना वैभव प्रकट किया है। उपन्यास साहित्य में गांधी विचारधारा का आर्थिक परिप्रेक्ष्य इस प्रकार है।

आर्थिक परिप्रेक्ष्य :

उपन्यासों में ग्रामसमस्या तथा ग्रामोद्धार का चित्रण :

अंग्रेजी शासन पद्धति तथा पूँजीवादी नृशंस व्यवस्था ने भारतीय समाज व्यवस्था को नष्ट कर दिया था। आर्थिकवैषम्य, निर्धनता तथा असमानता में वृद्घि होने लगी थी। धनीवर्ग अधिक धनवान होता जा रहा था, निर्धनवर्ग अधिक निर्धनता की गहरी खाई में गिरता जा रहा था। ग्रामीण समृद्घि दिनप्रतिदिन नष्ट हो रही थी। भारत गरीबी के गहरे अंधकार की ओर अग्रसर हो रहा था। कर्मवीर गांधीजी ने इस

ओर ग्रामोद्योगो के माध्यम से अपनी विशाल ष्टि फैलाई तथा ग्रामोद्धार का बीड़ा उठाया। वे अमीरगरीब की इस विशाल खाई को मिटाना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने मशीनों का विरोध,

ग्रामीण उद्योगों का विकास, खादी और चरखे का प्रचार आदि की ओर ध्यान दिया। शस्य श्यामला भारतमाता की आत्मा गाँवों में निवास करती है, इस वास्तविकता का अनुभव कर ही बापू ने अपने रचनात्मक कार्यक्रमों में ग्रामोन्नति को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया था। गांधीजी के साथसाथ उपन्यासकारों का ध्यान भी ग्रामजीवन की ओर आकृष्ट हुआ और उन्होंने ग्रामीणों की आर्थिकसामाजिक समस्याओं को अपनी कृतियों में चित्रित किया। इन रचनाओं में ग्राम्य जीवन के यथार्थ चित्रों एवं ग्रामसुधार के आदर्श विचारों का आलेखन हुआ है। उपन्यासकारों ने कभी वर्गवाद को प्रोत्साहन नहीं दिया। यही कारण है कि आर्थिक विषमता से पीड़ित जनता ही उनके उपन्यासों का आधार बनी है। ग्राम्यजीवन और उनकी समस्याओं का सजीव चित्रण करने वाले प्रथम हिन्दी उपन्यासकार प्रेमचंद हैं। ग्राम्य जीवन के इस कुशल चितेरे नें ग्रामीण समस्याओं को निकट से देखा था और ग्रामीणों के प्रति उनके हृदय में अपार प्रेम था। निःसंदेह प्रेमचंद भारतीय धरती के गायक, चाहक एवं उन्नायक थे। उनकी रचनाओं में गाँवों की धरती मुखरित हो उठी है। किन्तु उनके स्वभाव की चर्चा करते समय उनकी आर्थिक स्थिति भी उसकी आंखों से ओझल नहीं रही। किसान और जमींदार के संघर्ष में परास्त कृषकवर्ग के प्रति उनकी सहानुभूति अधिक थी, इसीलिए उन्होंने मुख्यतया किसानों की आर्थिक कठिनाइयों पर ही अधिक ध्यान दिया। किसानों के आर्थिकसंकट का मूल कारण वे जमींदारों और साहूकारों के शोषण में देखते हैं, इसलिए 'गोदान' में उन्होंने जमींदारी प्रथा और साहूकारों के शोषण के आधार पर कथानक रचे हैं।

'प्रेमाश्रम' में जमींदारी प्रथा के कारण लखनपुर गाँव की तबाही और इस प्रथा के उन्मूलन से गाँव की खुशहाली को लेकर कथानक का सृजन किया गया है। जमींदार के अत्याचारों को प्रकाश में लाने के लिए उन्होंने निरीह ग्रामीणों को सताने, चरागाह बंद करने, बेदखली के मुकदमे दायर करने की घटनायें ली हैं। इस उपन्यास में जमींदारी प्रथा से पीड़ित ग्रामवासियों के कल्याण एवं समृद्घि हेतु ऐसे आश्रम की स्थापना का संकेत है, जहाँ जमींदारकिसान, धनवाननिर्धन और हिन्दूमुसलमान सब प्रेमपूर्वक इकट्ठा रहते हुए सेवा और त्याग का व्रकत्क ग्रहण करते हैं। उपन्यास का प्रधान पात्र प्रेमशंकर जमींदारी का त्याग कर देता है।'रंगभूमि' में भारतीय ग्रामीणों के दैनिकसंघर्षो की गाथा है। पाण्डेपुर में सिगरेट फैकटरी खुलने से जो संभावनाएँ खडी हो जाती है और अंधा सूरदास जिन अधिकारों के लिए अपना बलिदान दे देता है, उनका अत्यंत प्राणवान एवं प्रभावोत्पादक चित्र हैं। कलों और कारखानोंवाला उद्योगवाद किस भांति ग्रामों का सर्वनाश कर रहा है यह 'रंगभूमि' में चित्रित हुआ है। वस्तुतः 'सेवासदन' में ग्राम के उदय का, 'प्रेमाश्रम' में उसके मध्यान्ह का और 'रंगभूमि' में उसके अस्त होने का श्य है। 'रंगभूमि' में तो भारतीय किसान का जीवन मानो सहस्त्र जिह्वाओ से बोल उठा है। 'गोदान' का कथानक भी जमींदारों एवं साहूकारों के शोषण को लेकर रचा गया है। बहुत मेहनत करने के बाद भी अंत मे होरी के हाथ में कुछ नहीं आता। जो कमाता है सब साहूकारों का ऋण चुकाने में चुक जाता है। उसकी आर्थिक विपन्नता का यह हाल है कि किसान होते हुए भी गऊ पालने की उसकी इच्छा अधूरी रह जाती है। सचमुच 'गोदान' कृषक जीवन की करुण कहानी है। 'गोदान' में होरी के जीवन की दुखान्त गाथा सुनाकर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भारतीय ग्रामीण जीवन के सहज नैसर्गिक विकास को रूढ़िवादी और प्रतिक्रियावादी शक्तियों ने कुंठित कर रखा है। कृषक जीवन को झूठी मर्यादाओं के पालन में और जमींदार एवं साहूकार के चंगुल में फँसे होरी के लिए बाहर और भीतर बंधन ही बंधन है। गोबर दातादीन को रोषपूर्वक कहता है कि, ''तुम लोगों ने किसानों को लूटकर मजदूर बना डाला और उनकी जमीन के मालिक बन बैठे हैं।''(1) गोबर का एक ओर कथन देखने योग्य है, ''अपना भाग्य खुद बनाना होगा, अपनी बुद्घि और साहस से इन आफतों पर विजय पाना होगा। कोई देवता, कोई गुप्त शक्ति, उनकी मदद करने न जाएगी।''(2) ''इस प्रकार उच्चवर्ग के अन्याय से दलित, ग्रसित निम्न किसान श्रमिक वर्ग में संगठित विद्रोह की भावना का उदय और तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप उसकी सक्रिय परिणति दोनों ही पक्षों का चित्रण 'गोदान' में हुआ है।''(3) 'कर्मभूमि' में प्रेमचंदजी ने किसानों –ारा लगान तक न दे सकने की असमर्थता का करूण चित्रण किया है। इस उपन्यास का गांधीविचार से प्रभावित पात्र अमरकांत धनीनिर्धन वर्ग के बीच की खाई को भरने का प्रयास करता है। उसे अपने पिता –ारा किए जानेवाले लेनदेन का व्यवसाय पसंद नहीं है। इसे वह पाप समझता है। अमरकांत केवल ग्रामीणों के प्रति बौद्घिक सहानुभूति रखनेवाला पात्र नहीं है। वह स्वयं मजदूर बनता है, खादी बेचता है और कर्म से भी ग्रामीणों की सहायता का प्रयत्न करता है। वृंदावनलाल वर्मा ने अपने उपन्यास

'अमरवेल' में गांधीजी के अनुसार ही एक योजना प्रस्तुत की है ''इस उपन्यास के बांगुदर्न के स्कूल मास्टर टहलराम, डॉ.स्नेहीलाल तथा सरकारी अफसर राघवन आदि सहकारिता में पूर्ण विश्वास रखते हैं और सोचते हैं कि इसी पद्घति से भारतीय ग्रामों का वास्तविक विकास हो सकता है। वर्माजी ने योजना बनाकर कार्य करने की पद्घति पर बल देते हुए सहकारिता पर अपनी पूर्ण आस्था प्रकट की है।''(4) ग्रामों का वास्तविक रूप इस उपन्यास में मिलता है। वर्माजी की धारणा है कि स्वतंत्रता और समानता का समन्वय सहकारी सिद्घांत ही कर सकता है। और समाज की आर्थिक प्रगति का शासन वैज्ञानिक योजनायें करें और दोनों की प्राणशक्ति अध्यात्म दें तो समाज का निरंतर कल्याण होता रहे। आधुनिक भारतीय ग्राम जीवन की समस्याओं का यथार्थ चित्रण करनेवाला यह एक महान उपन्यास है, जिस पर गांधी विचारधारा का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है।

जयशंकर प्रसादजी ने अपने उपन्यास 'तितली' में एक ओर सामंतीय व्यवस्था के दोषों और सम्मिलित कुटुम्ब के अंदर होनेवालें झगड़ों को अपने उपन्यास का विषय बनाया है। वहाँ दूसरी ओर ग्रामीण जीवन में जागरण और सुधार लाने के लिए किए जानेवाले प्रयासों को भी इस उपन्यास के अंतर्गत समेट लिया है। 'तितली' में समाज के कृष्णपक्ष की तुलना में उसके उज्ज्वल पक्ष की ओर प्रसाद की ष्टि अधिक है। इसलिये उन्होंने मधुवन और तितली, इन्द्रदेव और शैला के मिलन, तितली और शैला –ारा ग्रामसेवा एवं शिक्षा के सफल प्रयोगों का संकेत किया है। प्रसाद को नारी जाति के जागरण एवं ग्रामोत्थान के आंदोलनों में समाजव्यापी अंधकार का निराकरण करनेवाली आशाकिरणों के दर्शन होते हैं। 'तितली' में प्रसाद ने ग्रामीण जीवन के उत्थान का चित्र खींचते हुए सामन्तीय व्यवस्था के अनिवार्य अंत की ओर संकेत किया है। ग्रामीण जीवन को उन्नत करने की योजनाओं के अन्तर्गत सहकारी बैंक और औषधालय खोलने का उल्लेख कर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि, उपर्युक्त वातावरण मिलने पर पिछडी हुई ग्रामीण जनता अपने पाँव पर स्वयं खड़ी होकर उन्नति कर सकती है। आचार्य चतुरसेन शास्त्रीजी ने गांधीजी के आदर्श ग्राम का काल्पनिक चित्र 'उदयास्त' उपन्यास में प्रस्तुत किया है। ''लोग गाते है कबीर, मीरा के भजन, गीता के श्लोक। कभीकभी कोई कवि आ जाता है तो अच्छा खासा कवि सम्मेलन का समा बंध जाता। सबने नए मकान बनवाए है। गाँव का रंग बदला हुआ है। प्रत्येक कार्य की मोटरलारी है। तीनों फार्मों के बीच के क्षेत्र में सिनेमा है, स्कूल है, अस्पताल है, रसायन शाला है। बच्चे भी पढ़ते हैं। रात्रिशाला में प्रौढ पढ़ते हैं। नए युग का नया जीवन प्रत्येक की आत्मा में आशा और आनंद की नई ज्योति रश्मि का आलोक प्रकट करता है।''(5) प्रगतिवादी लेखक गाँवों को भारत में आर्थिक शोषण का प्रतीक मानते हैं और इसलिए गाँवों का यथार्थवादी वर्णन करना अपना लक्ष्य समझते हैं, किन्तु इस संबंध में हम विनम्रता पूर्वक इतना ही कहना उचित मानते हैं कि वस्तुतः वे कोई नई स्थापना नहीं करते हैं। महात्माजी ने इस युगयुग व्यापी सर्वांगीण शोषण के विरूद्घ बहुत पहले ही आवाज उठाई थी जो आगे चलकर उनके रचनात्मक कार्यों –ारा गाँवगाँव में और संपूर्ण देश में फैल गई थी। इस प्रकार उपन्यास लेखकों ने आर्थिकपरिप्रेक्ष्य पर विचार करते समय ग्रामसमस्या तथा ग्रामोद्घार पर प्रकाश डाला है।

उपन्यासों में चरखे और खादी का महत्व :

पूज्य बापू ने चरखे और खादी की उपयोगिता पर बहुत बल दिया है। आर्थिक समता स्थापित करने तथा ग्रामोन्नति करने के लिए चरखे और खादी की महत्ता का समर्थन उपन्यासों में भी हुआ है। उपन्यास के पात्र सूत कातते हैं, चरखा चलाते हैं और खादी की उपयोगिता का प्रचार करते हैं।

प्रतापनारायण श्रीवास्तव कृत 'बयालीस' उपन्यास का राजकुमार दिवाकर खादी का पुजारी है। ''इस उपन्यास में निरूपित रमईपुर गाँव में तो उपन्यासकार नें चरखादंगल की विस्तृत योजना का ही निर्माण कर दिया।''(6) प्रेमचंद की ष्टि में चरखा और खादी आर्थिक स्वावलंबन के अतिरिक्त आत्मशुद्घि के भी महत्त्वपूर्ण साधन है। प्रेमचंद कृत 'कर्मभूमि' उपन्यास का पात्र अमरकांत सूत कातने और खादी पहनने की उपयोगिता को समझता है। ''स्वयं सूत कातने और खादी पहनने के साथसाथ वह इनका प्रचार भी करता है।''(7) 'निर्मला' उपन्यास में कृष्णा के होनेवाले पति अर्थात डॉ.सिन्हा के छोटे भाई खादी के बड़े प्रेमी है। पीठ पर खद्दर लादकर देहातों में बेचने जाते हैं। और गांधीजी के असहयोग आंदोलन में सक्रिय सहायता देते हैं। इस प्रकार उपन्यास लेखको ने आर्थिकपरिप्रेक्ष्य पर विचार करते समय ग्रामीण जीवन की समस्याओं पर गहराई से विचार कर ग्रामोद्योगों की उन्नति का संदेश दिया है।

संदर्भ संकेत –

1. गोदान – प्रेमचंद – पृष्ठ – 22
2. गोदान – प्रेमचंद – पृष्ठ – 364
3. गोदान – प्रेमचंद – पृष्ठ – 335
4. अमरवेल – वृंदावनलाल वर्मा – पृष्ठ – 420
5. उदयास्त – चतुरसेन शास्त्री – पृष्ठ – 221–222
6. बयालीस – प्रतापनारायण श्रीवास्तव– पृष्ठ – 290
7. कर्मभूमि – प्रेमचंद – पृष्ठ – 120

LBP PUBLICATION